S.R.S.D. Memorial Shiksha Shodh Sansthan, Agra, India
UGC Sl. No.64431

INQUISITIVE TEACHER
A Peer Reviewed Refereed Research Journal
ONLINE ISSN-2455-5827
Volume V, Issue II, December 2018, pp. 210-215
www.srsshodhsansthan.org

सामाजिक आर्थिक दृष्टि से उच्च मध्यम वर्ग एवं निम्न मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों का सामाजिक विज्ञान विषय एवं भाषा विषय के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ.वेदप्रकाश[1], डॉ. अर्चना कुलश्रेष्ठ[2], सुमित्रा शर्मा[3]

[1]निर्देशक व विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,महाराजा विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर
[2]सहनिर्देशिका, शंकरा इन्सस्टीटयूट ऑफ बी.एड,, कूकस, जयपुर
[3]शोध छात्रा, महाराजा विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर

सामाजिक आर्थिक स्थिति का अर्थ :–

कोई भी व्यक्ति वो किस तरह के समाज के लोगों के साथ निवास करता है साथ ही अपनी जीवन शैली पर कितना खर्च करता है ये दोनों कारक ही उसकी सामाजिक आर्थिक स्थिति प्रदर्शित करते है। सामान्यताया ये तीन प्रकार ही होती है। 1.उच्च 2.मध्यम 3निम्न

शैक्षिक उपलब्धि :– शैक्षिक उपलिब्ध के आधार पर ही हम विद्याार्थियों के मध्य अन्तर कर सकते है कि यह बालक प्रतिभाशाली है, सामान्य है। यहां शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य है कक्षा 8 में अध्ययनरत विद्यार्थी से है।

प्रस्तावना :–

अधिगम की प्रक्रिया द्वारा ही व्यक्ति का विकास होता है। इसलिए वुडवर्थ ने अपनी परिभाषा में अधिगम को एक व्यक्ति विकास की प्रक्रिया माना है। जो कार्य हमें पहले कठिन जान पडते है, वे ही कार्य बाद में सरल हो जाते है। कार्य के दौरान वह उतना ही सरल होता जाता है। बार–बार अभ्यास करने के बाद वही कार्य बिना विशिष्ट प्रयास के सम्पादन किया जा सकता है। इन्ही प्रकार के कार्य के सम्पादन की प्रक्रिया को आदत कहते है, अतः आदत एक सीखा हुआ कार्य अर्थात् अर्जित व्यवहार है जो स्वतः ही होता है।

समाज में सामाजिक स्वरूप एवं प्रक्रिया को देखते हुए शिक्षण प्रक्रिया एक ऐसी प्रक्रिया होनी चाहिए जो कि विद्यार्थी में क्रियाशीलता के साथ साथ शिक्षण के प्रति रूचि उत्पन्न करे। बालक के सामाजिक पर्यावरण एवं परिवार की सामाजिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव होता है।

जिस प्रकार की सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षिक स्थिति परिवार की होती हैं बालक पर उसका उचित प्रभाव पड़ता है। बालक उसी के अनुसार सामाजिक व्यवहार व आचरण प्रदर्शित करता है।

प्रस्तुत शोधलेख में समाज का वर्गीय विभाजन करने से पांच प्रकार के प्रस्थिति वर्ग स्पष्ट होते है। यथा उच्च वर्ग, उच्च मध्यम वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न मध्यम व निम्न वर्ग । विभिन्न वर्गो से संबंधित परिवारों व व्यक्तियों की सामाजिक परिस्थितियों व भूमिका भिन्न–भिन्न होती हैं प्राचीन काल में जहाँ सरल समाजों में प्रदत्त प्रस्थिति का महत्व हुआ करता था और उसी के आधार पर समाज में व्यक्ति का स्थान निश्चित होता था। परन्तु वर्तमान काल खंड में भी सामाजिक स्थिति के निर्धारण में व्यक्ति के व्यवसाय चरित्र, कुल, आर्थिक स्थिति इत्यादि महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सरकार ने 2002 में संविधान में 86वां संशोधन किया। इसके अन्तर्गत 6 से 11 वर्ष तक के सभी बच्चों को बिना किसी कठिनाई या बाधा के शिक्षा सुविद्या मिले। इसलिए इस अधिकार को मूल अधिकार बना दिया गया। इसके लिए संविधन में एक नया अनुच्छेद '21ए' जोड़ दिया गया हैं। इस अनुच्छेद के अनुसार राज्य कानून द्वारा निर्धारित ढंग से 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करेगा।

मानव संसाधन के पूर्ण विकास के लिए 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषण की गई। इसमें 1992 में कुछ परिवर्तन किए गए। परिवर्तनों के बाद 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को 21वीं सदी के प्रारम्भ से पहले अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा सुलभ कराने और सकल घरेलू उत्पाद का 6 प्रतिशत शिक्षा पर खर्च करने का वचन दिया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस बात को स्वीकार किया गया कि सामाजिक एवं क्षेत्रीय विषमता को दूर करने, स्त्री–पुरूषों के बीच की खाई को पाटने और पिछड़ों एवं अल्य संख्यकों को उचित स्थान दिलाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका हैं 1950–51 में राष्ट्रीय बजट में शिक्षा का हिस्सा 0.68 प्रतिशत था जो 2002–03 में बढ़कर 4.2 प्रतिशत हो गया। दसवीं योजना के अन्त तक यानि 2007 तक इसके 6 प्रतिशत हो जाने की आशा थी।

वस्तुतः सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि का प्रभाव प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से बालकों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता हैं इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी ने

सामाजिक,आर्थिक दृष्टि से उच्च मध्यम वर्ग एवं निम्न मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों को भाषा एवं सामाजिक विज्ञान विषयों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

अध्ययन के उद्देश्य –

शोध पत्र में निम्नलिखित उद्देश्यों हेतु कार्य किया गया है :–

1. उच्च मध्यम वर्ग एवं निम्न मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों का भाषा एवं सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. निम्न मध्यम वर्ग एवं मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों की भाषा एवं सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं :–उपर्युक्त उद्देश्यों के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1. उच्च मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों का भाषा विषय की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. निम्न मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों का सामाजिक विज्ञान विषय के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उपकरण : उपकल्पनाओं की जांच के लिये इस शोध पत्र में पूर्व कक्षा के प्राप्तांक का प्रयोग किया गया है। शोध उपकरण के रुप में लेखक ने एल एन दुबे द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया जिसमें परिवार की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि से संबंधित प्रश्नों से प्राप्त उत्तरों का सांख्यिकी विश्लेषण किया।

न्यादर्श :– इस अध्ययन हेतु यादृच्छिक न्यादर्श का प्रयोग करते हुये जयपुर जिले के निजी विद्यालय को लिया गया । जिसमें 180 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रुप में लिया गया। समस्त विद्यालयों से प्राप्त आंकडों के आधार पर शोधार्थी ने विद्यार्थियों का वर्गीय विभाजन किया।

आंकडों से प्राप्त परिणाम :–समूहों में अन्तर ज्ञात करने के लिए उपयुक्त सांख्यिकी का प्रयोग करते हुये टी मूल्य ज्ञात किये गये है। प्राप्त परिणामों का प्रस्तुतीकरण एवं उनकी व्याख्या निम्न रुप में प्रस्तुत है।

शून्य परिकल्पना :– उच्च वर्ग एवं मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों का भाषा विषय की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

उच्च वर्ग एवं मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों का भाषा विषय की शैक्षिक उपलब्धि के परीक्षण की तालिका

क्र. सं.	विद्यार्थियों की संख्या	समूह	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	t
1.	90	उच्च वर्ग	36.50	3.41	3.32
2.	90	मध्यम वर्ग	34.83	3.33	

स्वतंत्रता के अंश 178 हेतु आवश्यक 'टी' का तालिका मान

0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान – 1.97

0.01 विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान – 2.64

तालिका से स्पष्ट है कि प्रदत्तों की गणना से प्राप्त टी का मान 3.32 है, जो कि 0.01 विश्वास स्तर पर आवश्यक तालिका मान 2.64 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर आवश्यक तालिका मान 1.97 के मान से अधिक। अतः शून्य परिकल्पना उच्च वर्ग एवं मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों का भाषा विषय की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' को दोनो स्तरों 0.01/0.05 पर अस्वीकृत किया जाता है।

शून्य परिकल्पना :– मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग के विद्यार्थियों का सामाजिक विषय की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग के विद्यार्थियों का सामाजिक विषय की शैक्षिक उपलब्धि के परीक्षण की तालिका

क्र. सं.	विद्यार्थियों की संख्या	समूह	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	t
1.	90	मध्यम वर्ग	34.83	3.33	4.25
2.	90	निम्न वर्ग	32.83	2.98	

स्वतंत्रता के अंश 178 हेतु आवश्यक 'टी' का तालिका मान

0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान – 1.97

0.01 विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान – 2.64

तालिका से स्पष्ट है कि प्रदत्तों की गणना से प्राप्त टी का मान 4.25 है, जो कि 0.01 विश्वास स्तर पर आवश्यक तालिका मान 2.64 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर आवश्यक तालिका मान 1.97 के मान से अधिक। अतः शून्य परिकल्पना मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक विषय की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' को दोनो स्तरों 0.01/0.05 पर अस्वीकृत किया जाता है।

प्राप्त परिणामों से स्पष्ट हुआ कि उच्च वर्ग एवं मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से ज्यादा अच्छी है। शोधार्थी का निष्कर्ष न्याय संगत भी प्रतीत होता है क्योंकि निम्न वर्ग मध्यम वर्ग की अपेक्षा एवं मध्य वर्ग उच्च वर्ग की अपेक्षा (शिक्षार्थी के माता–पिता भाई–बहिन) कम पढे लिखे है। अतः वे अपने बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान देते हैं। निम्न वर्ग के परिवार कम शिक्षित होते हैं अतः वे अपने बालकों की शिक्षा पर कम ध्यान दे पाते हैं। आखिर में लेखक ऐसे ही अन्य प्राप्त परिणामों का उल्लेख करते हैं यथा ओझा (1979)शुक्ला (1984) अशोक कुमार (2000) जो उपरोक्त शोध के परिणामों को बल प्रदान करते है।

शैक्षिक निहितार्थ :–

यह शोध पत्र शिक्षा जगत में शिक्षाविदों, शिक्षकों शिक्षार्थियों एवं अभिभावकों के विचारों को दिशा प्रदान करने के लिए एक प्रयास है समाज की प्रत्येक इकाई के लिए संदेश प्रदान करने वाला है। हमें निष्कर्षो से जो परिणाम ज्ञात होते है। उनके आधार पर निम्न सुझाव दिये गये जा सकते है :– शिक्षाविदों को चाहिए कि निम्न वर्ग एवं वंचित वर्ग के शिक्षार्थियों के लिए आवश्यक नितियों में परिवर्तन करें एवं धन के अभाव की वजह से कोई भी बालक शिक्षा से वंचित न रहें।। पाठ्यक्रम ऐसा बनाया जाए जिसमें नवाचार प्रणाली का प्रयोग संभव हो तथा पुस्तकों की रचना के समय भी नवाचार प्रणाली की गतिविधियों का समायोजन किया जाना चाहिए। विद्यालय प्रशासन को चाहिए कि वह वंचित वर्ग के लिए शिक्षा के उचित कदम को बढावा दे। इन निम्न वर्ग के बालकों

के लिए विद्यालय द्वारा अतिरिक्त कक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए। विद्यालय प्रशासन द्वारा शिक्षकों को निर्देश दिया जाए कि कोई भी शिक्षा से वंचित व बालक शिक्षा से अलग न रहें। उनको पाठ्यपुस्तक एवं अन्य शैक्षणिक सामग्री समय समय पर उपलब्ध करवाई जाये। विद्यार्थियों को भी चाहिए कि वे अपने अवकाश के समय का सदुपयोग अतिरिक्त शिक्षण हेतु करें। की विधियों द्वारा नया ज्ञान सीखकर अर्जित करने में लगाये। घर में अभिभावकों को भी चाहिए कि वे अपने बच्चों पर विशेष ध्यान दे एवं नियमित कक्षा में अध्ययन हेतु प्रोत्साहित करें।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. भार्गव बी.एच, ''क्रिमिनल ट्राइब्स'' लखनऊ 1949

2.हट्टन जे. एच. ''कास्ट इन इण्डिया'', आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस 1951

3. सत्यपाल रुहेला,''दी गडूलिया लोहार्स ऑफ राजस्थान'',न्यू देहली, 1968

4. कटियार, टी.एस.,''सोश्यल लाइफ इन राजस्थान'',इलाहाबाद, 1964

5. शाह,पी. जी.,डिनोटीफाइड कम्यूनिटीज ऑफ वैस्टर्न इण्डिया, बम्बई,1967

6. दास,ए.के. तथा अन्य,हैंड बुक ऑफ सिडयूल्ड कास्ट्रज एण्ड सिडयूल्ड ट्राइबन ऑफ वैस्ट बंगाल, कलकत्ता,1986

7. भारत सरकार प्रकाशन विभाग,दि पिपुल ऑफ इण्डिया (1971)

8. शहावैया,ट्राइबब्ल ऑफ इण्डिया, भारतीय आदिय जाति सेवक संघ,नई दिल्ली – 1972

9. तिवाडी, शिव कुमार, ''भारत की जनजातीय,'' नादर्न बुक सेंन्टर, नई दिल्ली (1992)

10. सच्चिदानन्द, ''प्रोफाइल्स ऑफ ट्राइबल कल्चर इन बिहार –1965

11. अनिरुद्ध प्रसाद– ''आरक्षण,सामाजिक न्याय एवं राजनैतिक संतुलन'' रावत प्रकाशन, जयपुर–1991

12 सिंह, रामगोलप–''सामाजिक न्याय एवं दलित संघर्ष,'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी– 1994

13 देवगावकर, एन.जी., ''प्राब्लम्स ऑफ डवलपमैंट ऑफ ट्राइबल एरिया,'' इण्टर इण्डिया पबिलकेशन,नई दिल्ली–1980

14.सक्सेना (2010), नवाचारी षिक्षण पद्धतियाँ,जयपुर :राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।

15.व्यास,शर्मा(2010) ,अधिगम षिक्षण और विकास के मनोसामाजिक आधार,जयपुर :राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी ।